सूचकांक
74,294.96
-19.63
शनिवार
कानपुर, 19 सितम्बर 2026
वर्ष 69 अंक 259
आर.एन.आई. नं. 6984/58
रजि. सि- 2/CPM/03/KPHO/2013-14
मूल्य 2 रुपया पृष्ठ 8
हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आर्थिक दैनिक
व्यापारसंदेश

पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का समापन

कानपुर, 18 सितम्बर (निस)। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय मशीनो द्वारा फ़सल अवशेषों का प्रबंधन था जिसमें पूरे कानपुर देहात जिले के 25 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को फ़सल अवशेषों के प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देना था।कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र बांदा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर श्याम सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की।

उन्होने फ़सल अवशेषों से बनाए जा सकने वाली कंपोस्ट को बनाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि खेत में पराली को आग लगाने से मिट्टी में विद्यमान् सूक्ष्म जीवों और केंचुओ की संख्या में बहुत नुक़सान होता है जिससे मिट्टी की उर्वरता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा उन्होंने फ़सल अवशेष प्रबंधन के अन्य विकल्पों जैसे पराली से बायो गैस उत्पादन, मशरूम उत्पादन, पैकिंग सामग्री के रूप में फसल अवशेषों के उपयोग आदि पर भी प्रकाश डाला।

केंद्र के प्रभारी डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने बताया कि गेहूं-धान फ़सल चक्र में काफ़ी मात्रा में फसलों अवशेष उत्पन्न होते हैं। गेहूं की प्रणाली पशुओं के चारे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है व इसका प्रबंधन करने के लिए डेढ़ महीने का समय भी मिल जाता है इसलिए गेहूं की पराली प्रबंध में समस्या नहीं आती। लेकिन धान की लंबी अवधि की किस्मों की कटाई और गेहूं की बुवाई में सिर्फ़ 15 दिन का ही समय मिलता है व पराली के चारे के रूप में कम इस्तेमाल से धान की पराली प्रबंधन एक चुनौती हैं। उन्होंने बताया की धान की कम अवधि की किस्मों जैसे पी बी 1509, पी बी 1692 आदि की बुआई से धान की पराली प्रबंधन के लिए लगभग एक महीने का पर्याप्त समय मिल जाता है इसलिए उन्होंने किसानों से अपील की कि वे जल संरक्षण तथा पराली न जलाने के लिए खुद भी प्रेरित हो व और साथी किसानों को भी जागरूक करें ताकि हम होने वाली पीढियों के लिए एक वातावरण बचा सके।केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने पराली के यथासंभव प्रबंधन द्वारा मृदा स्वास्थ्य पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने मृदा संरक्षण व गेहूं की बुवाई में इस्तेमाल होने वाली मृदा संरक्षण केंद्रित मशीनों जैसे ज़ीरो ट्रिल ड्रिल, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर के बारे में बताया व उनके प्रयोग से मृदा के भोतिक गुणों में होने वाले सुधार के बारे में विस्तार से बताया। वेज्ञानिक डॉ दीपक मिश्रा ने विभिन्न मशीनों के द्वारा किए जाने वाले पराली प्रबंधन से होने वाले आर्थिक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी व उन्हे पराली से होने वाले विभिन्न व्यवसाओ व उनमें मिलने वाली सब्सिडी के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ राजेश राय, डॉ अरुण कुमार सिंह, उपेन्द्र कुमार सिंह, दिव्यांशु यादव, शुभम यादव प्रगतिशील किसान चरन सिंह, अशोक, जय सिंह, आदि ने भी अपने विचार साझा किए।

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

अंक 200 कानपुर, शनिवार 19 सितम्बर 2026 पृष्ठ:8

फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन

हिंदुस्तान का इतिहास

कानपुर नगर, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय मशीनो द्वारा फ़सल अवशेषों का प्रबंधन था जिसमें पूरे कानपुर देहात जिले के 25 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को फ़सल अवशेषों के प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देना था।कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र बांदा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर श्याम सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होने फ़सल अवशेषों से बनाए जा सकने वाली कंपोस्ट को बनाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि खेत में पराली को आग लगाने से मिट्टी में विद्यमान् सूक्ष्म जीवों और केंचुओ की संख्या में बहुत नुक़सान होता है जिससे मिट्टी की उर्वरता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। केंद्र के प्रभारी डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने बताया कि गेहूं-धान फ़सल चक्र में काफ़ी मात्रा में फसलों अवशेष उत्पन्न होते हैं। गेहूं की प्रणाली पशुओं के चारे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है व इसका प्रबंधन करने के लिए डेढ़ महीने का समय भी मिल जाता है इसलिए गेहूं की पराली प्रबंध में समस्या नहीं आती। उन्होंने बताया की धान की कम अवधि की किस्मों जैसे पी बी 1509, पी बी 1692 आदि की बुआई से धान की पराली प्रबंधन के लिए लगभग एक महीने का पर्याप्त समय मिल जाता है इसलिए उन्होंने किसानों से अपील की कि वे जल संरक्षण तथा पराली न जलाने के लिए खुद भी प्रेरित हो व और साथी किसानों को भी जागरूक करें ताकि हम होने वाली पीढियों के लिए एक वातावरण बचा सके।केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने पराली के यथासंभव प्रबंधन द्वारा मृदा स्वास्थ्य पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। वेज्ञानिक डॉ दीपक मिश्रा ने विभिन्न मशीनों के द्वारा किए जाने वाले पराली प्रबंधन से होने वाले आर्थिक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी व उन्हे पराली से होने वाले विभिन्न व्यवसाओ व उनमें मिलने वाली सब्सिडी के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ राजेश राय, डॉ अरुण कुमार सिंह, उपेन्द्र कुमार सिंह, दिव्यांशु यादव, शुभम यादव प्रगतिशील किसान चरन सिंह, अशोक, जय सिंह, आदि ने भी अपने विचार साझा किए।

वर्ष-19 अंक-316 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, शनिवार 19 सितम्बर 2026

कानपुर से प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात, औरैया में प्रसारित

दैनिक नगर छाया

RNI No.- UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

अध्यक्ष व लोक लेखा समिति के पूर्व सभापति निशुल्क शिक्षा के साथ कॉपी-किताब, यूनिफार्म, रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को निशुल्क संख्या में उद्यमी मौजूद रहे।

फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का समापन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर आयोजित पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। मशीनों द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर हुए प्रशिक्षण में कानपुर देहात के 25 किसानों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को फसल अवशेषों के प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों की जानकारी देना था। कृषि विज्ञान केंद्र बांदा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. श्याम सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में पराली से कंपोस्ट बनाने की विधि बताई। उन्होंने कहा कि खेत में पराली जलाने से मिट्टी के सूक्ष्म जीवों और केंचुओं को नुकसान पहुंचता है, जिससे उर्वरता प्रभावित होती है। उन्होंने पराली से बायोगैस, मशरूम और पैकिंग सामग्री तैयार करने के विकल्पों की जानकारी भी दी। केंद्र प्रभारी डॉ. अजय कुमार सिंह ने बताया कि गेहूं-धान फसल चक्र में अवशेष प्रबंधन की अलग-अलग चुनौतियां हैं। धान की लंबी अवधि वाली किस्मों की कटाई और गेहूं की बुवाई के बीच करीब 15 दिन का समय मिलने से पराली प्रबंधन कठिन होता है। उन्होंने पीबी 1509 और पीबी 1692 जैसी कम अवधि वाली धान की किस्मों की बुवाई करने की सलाह दी, जिससे पराली प्रबंधन के लिए पर्याप्त समय मिल सके। वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने जीरो ट्रिल ड्रिल, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर और स्मार्ट सीडर जैसी मशीनों से मृदा स्वास्थ्य में होने वाले सुधार की जानकारी दी। डॉ. दीपक मिश्रा ने मशीनों से पराली प्रबंधन के आर्थिक लाभ और संबंधित व्यवसायों में मिलने वाली सब्सिडी के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ. राजेश राय, डॉ. अरुण कुमार सिंह, उपेंद्र कुमार सिंह, दिव्यांशु यादव, शुभम यादव समेत प्रगतिशील किसान चरन सिंह, अशोक और जय सिंह मौजूद रहे।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 18 अंक : 81 कानपुर, शनिवार 19 सितम्बर 2026 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का समापन

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय मशीनो द्वारा फ़सल अवशेषों का प्रबंधन था जिसमें पूरे कानपुर देहात जिले के 25 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को फ़सल अवशेषों के प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देना था।कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र बांदा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर श्याम सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होने फ़सल अवशेषों से बनाए जा सकने वाली कंपोस्ट को बनाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि खेत में पराली को आग लगाने से मिट्टी में विद्यमान् सूक्ष्म जीवों और केंचुओ की संख्या में बहुत नुक़सान होता है जिससे मिट्टी की उर्वरता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा उन्होंने फ़सल अवशेष प्रबंधन के अन्य विकल्पों जैसे पराली से बायो गैस उत्पादन, मशरूम उत्पादन, पैकिंग सामग्री के रूप में फसल अवशेषों के उपयोग आदि पर भी प्रकाश डाला।

केंद्र के प्रभारी डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने बताया कि गेहूं-धान फ़सल चक्र में काफ़ी मात्रा में फसलों अवशेष

उत्पन्न होते हैं। गेहूं की प्रणाली पशुओं के चारे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है व इसका प्रबंधन करने के लिए डेढ़ महीने का समय भी मिल जाता है इसलिए गेहूं की पराली प्रबंध में समस्या नहीं आती। लेकिन धान की लंबी अवधि की किस्मों की कटाई और गेहूं की बुवाई में सिर्फ़ 15 दिन का ही समय मिलता है व पराली के चारे के रूप में कम इस्तेमाल से धान की पराली प्रबंधन एक चुनौती हैं। उन्होंने बताया की धान की कम अवधि की किस्मों जैसे पी बी 1509, पी बी 1692 आदि की बुआई से धान की पराली प्रबंधन के लिए लगभग एक महीने का पर्याप्त समय मिल जाता है इसलिए उन्होंने किसानों से अपील की कि वे जल संरक्षण तथा पराली न जलाने के लिए खुद भी प्रेरित हो व और साथी किसानों को भी जागरूक करें ताकि हम होने वाली पीढ़ियों के लिए एक वातावरण बचा सके।केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने पराली के यथासंभव प्रबंधन द्वारा मृदा स्वास्थ्य पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने मृदा संरक्षण व गेहूं की बुवाई में इस्तेमाल होने वाली मृदा संरक्षण केंद्रित मशीनों जैसे ज़ीरो ट्रिल ड्रिल, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर के बारे में बताया व उनके प्रयोग से मृदा के भोतिक गुणों में होने वाले सुधार के बारे में विस्तार से बताया। वेज्ञानिक डॉ दीपक मिश्रा ने विभिन्न मशीनों के द्वारा किए जाने वाले पराली प्रबंधन से होने वाले आर्थिक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी व उन्हे पराली से होने वाले विभिन्न व्यवसाओ व उनमें मिलने वाली सब्सिडी के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ राजेश राय, डॉ अरुण कुमार सिंह, उपेन्द्र कुमार सिंह, दिव्यांशु यादव, शुभम यादव प्रगतिशील किसान चरन सिंह, अशोक, जय सिंह, आदि ने भी अपने विचार साझा किए।

अमर उजाला कानपुर देहात 19/09/2026

रानिया विधानसभा क्षेत्र के लाधीपुर में है। इसके बाद प्रस्ताव बनाकर शासन

पराली न जलाने का लिया संकल्प

संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर देहात। दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में शुक्रवार को फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण का समापन हो गया। किसानों ने पराली न जलाने का संकल्प लिया। इसके बाद किसानों को प्रमाण पत्र दिए गए।

प्रशिक्षण सत्र में कृषि विज्ञान केंद्र बांदा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर श्याम सिंह मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने किसानों को बताया कि फसल अवशेषों से कंपोस्ट बनाकर मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाई जा सकती है। इसके लिए उन्होंने डी-कंपोजर की मदद से फसल अवशेष को सड़ाकर खाद बनाने के तरीके की जानकारी दी। बताया कि खेत में पराली जलाने से सूक्ष्म जीवों और मिट्टी की सेहत के लिए फायदेमंद केंचुए नष्ट हो जाते हैं। इससे मिट्टी की उर्वरता खराब होती है। इस मौके पर किसानों को बायो गैस उत्पादन, मशरूम उत्पादन, पैकिंग सामग्री रूप में पराली प्रयोग की जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के प्रभारी डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने बताया कि गेहूं व धान की फसल में पराली मिलती है। गेहूं की पराली तो पशु चारे में प्रयोग हो जाती है लेकिन धान की पराली कई बार किसान अनजाने में जला देते हैं।

जीरो ट्रिल ड्रिल, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर के जरिये भी पराली को खेत में मिलाकर खाद बनाई जा सकती है। कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर दीपक मिश्रा ने विभिन्न मशीनों से पराली प्रबंधन की जानकारी दी। यहां डॉक्टर राजेश राय, डॉक्टर अरुण कुमार सिंह, उपेंद्र कुमार सिंह, दिव्यांशु यादव आदि मौजूद रहे।

R.N.i .NO.
UPHIN/2008/
29355
डाक पंजीकन
संख्या KANPUR
Cty 328/2012

दैनिक
वक्त दर्शन

कानपुर से प्रकाशित, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र एवं दिल्ली, मुम्बई, तेलंगाना

वर्षः 18 अंक :232 कानपुर, शनिवार 19 सितम्बर 2026 पृष्ठ : 8

फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन

हरिओम गुप्ता

कानपुर नगर, वक्त दर्शन कार्यालय गोपाल नगर संवाददाता चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय मशीनो द्वारा फ़सल अवशेषों का प्रबंधन था जिसमें पूरे कानपुर देहात जिले के 25 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को फ़सल अवशेषों के प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देना था।कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र बांदा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर श्याम सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होने फ़सल अवशेषों से बनाए जा सकने वाली कंपोस्ट को बनाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि खेत में पराली को आग लगाने से मिट्टी में विद्यमान् सूक्ष्म जीवों और केंचुओ की संख्या में बहुत नुक़सान होता है जिससे मिट्टी की उर्वरता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। केंद्र के प्रभारी डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने बताया कि गेहूं-धान फ़सल चक्र में काफ़ी मात्रा में फसलों अवशेष उत्पन्न होते हैं। गेहूं की प्रणाली पशुओं के चारे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है व इसका प्रबंधन करने के लिए डेढ़ महीने का समय भी मिल जाता है इसलिए गेहूं की पराली प्रबंध में समस्या नहीं आती। उन्होंने बताया की धान की कम अवधि की किस्मों जैसे पी बी 1509, पी बी 1692 आदि की बुआई से धान की पराली प्रबंधन के लिए लगभग एक महीने का पर्याप्त समय मिल जाता है इसलिए उन्होंने किसानों से अपील की कि वे जल संरक्षण तथा पराली न जलाने के लिए खुद भी प्रेरित हो व और साथी किसानों को भी जागरूक करें ताकि हम होने वाली पीढियों के लिए एक वातावरण बचा सके।केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने पराली के यथासंभव प्रबंधन द्वारा मृदा स्वास्थ्य पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। वेज्ञानिक डॉ दीपक मिश्रा ने विभिन्न मशीनों के द्वारा किए जाने वाले पराली प्रबंधन से होने वाले आर्थिक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी व उन्हे पराली से होने वाले विभिन्न व्यवसाओ व उनमें मिलने वाली सब्सिडी के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ राजेश राय, डॉ अरुण कुमार सिंह, उपेन्द्र कुमार सिंह, दिव्यांशु यादव, शुभम यादव प्रगतिशील किसान चरन सिंह, अशोक, जय सिंह, आदि ने भी अपने विचार साझा किए।